Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Volume-3, Issue-4, Oct-2013 Available online at www.aygrt.isrj.net

GRT

# मृदुला गर्ग का नया उपन्यास मिलजुल मन उनके लेखन की तरोताजगी और जिंदादिली की एक मिसाल

**वनिता त्र्यंबक पवार**

स्वर्गीय अण्णासाहेब आर.डी. देवरे कला व वि–ान महाविद्यालय, म्हसदी ता. साक्री जि. धुलियाँ

**Ãöö¸Ö¿Ö :-** मृदुला गर्गजी का ‘मिलजुल मन’ सन् 2009 मे प्रकाशित सातवाँ उपन्यास है । यह उपन्यास दो बहनों -गुलमोहर और मोगरा की कहानी के रूप में रचा गया है। ‘मिलजुल मन’ वरिष्ठ कथाकार मृदुला गर्ग का नया उपन्यास है। जो उनके लेखन की तरोताजगी और जिंदादिली की एक मिसाल है। इस उपन्यास का कथा-काल आजादी के तुरंत बाद का है। ‘मिलजुल मन’ के पूर्व लेखिका का ‘कठगुलाब’ उपन्यास काफी चर्चित हुआ। ‘कठगुलाब’ का स्त्री-विमर्श वैश्विक परिदृश्य में है, ‘मिलजुल मन’ का राष्ट्रीय परिदृश्य में है। ‘कठगुलाब’ में प्रत्येक स्त्री मातृत्व सुख के लिए व्याकुल है, ‘×Ö»Ö•ुल मन’ की मोगरा के लिए भी मां बनना उसके दु:ख का निदान है। उसके कष्टों का निदान स्वयं उसके भीतर है, उसके शरीर में है, इसे मोगरा मां बनकर ही सम–ा पाती है। पाठक अपनी अतीत-बिंधी दृष्टि से यÆ ²ÖüÖ ÃÖ´Ö–ा सकते हैं। स्त्रियां पुनरूत्पादन से ही संतुष्ट हो या उन्हें उत्पादन में भी भागीदारी मिले, यह समकालीन समस्या अधिक है। इस तरह यह उपन्यास स्त्री की व्यथा को स्वतंत्र रूप से चित्रित करनेवाला सशक्त उपन्यास है।

**प्रस्तावना-**

इस उपन्यास की नायिका गुलमोहर उर्फ गुल और उसकी बहन मोगरा है। गुल-मोगरा जैसे व्यक्तित्वों से यह जान लेना उचित होता कि उनकी सहयोगिनी बनकर रहने की जिजिविषा के साथ-साथ अपने अस्तित्व की स्वतंत्र पहचान कराना है। अपनी इमेज को स्थापित करना है। चतुर्वेदी के शब्दों मे “नए आधुनिक युग की स्त्री सामाजिक अंतर्विरोधों की सृष्टि थी। वह परिवार चाहती है, पुरूष का सहारा चाहती है। साथ ही स्वतंत्र एवं स्वायत्व व्यक्तित्व की पहचान एवं उसकी स्वीकृति भी चाहती है- स्त्री की स्वतंत्र पहचान, स्वतंत्र जीवन शैली, स्त्री संस्कृति के स्वतंत्र रूपों के सृजन एवं गैर पुरूष संदर्भो की सृष्टि के लिए पहली शर्त है, कि स्त्री स्वयं को अलग रूप में देखे। पुरूष से अपनी भिन्नता को पहचाने। स्त्री के रूप में अपने को परिभाषित करे।”[1]

‡ÃÖ¾Ö¸üÆ ‘मिलजुल मन’ भी स्त्री के रूप को परिभाषित करने तथा उसकी इमेज को स्वतंत्र रूप से चित्रित करनेवाला सशक्त उपन्यास Æ…

वरिष्ठ कथाकार मृदुलाजी गर्ग के उपन्यास ‘मिलजुल मन’ का कथाकाल आजादी के तुरंत बाद का है। यह मोहभंग का काल था। मृदुला गर्ग कहती है, ‘पहला सपना सौ बरस तक देखा गया था और टूटने में एक पल नहीं लगा था। आजादी के बाद का मासूमियत और दुविधा के घालमेल से बना सपना, कुल दस-बीस बरस देखा गया और देखने के दौरान टूटकर बिखर गया।’[2]

साहित्य को विचारधाराओं और उससे भी आगे बढ़कर –Ö›Ö और दल बंदियों की रोशनी में देखने का चलन हो गया हो तो ऐसी रचनाएं जो अपनी पठनीयता के धागों में व्यक्ति, समाज, देश और दुनिया की बेबाक छवि सारी जटिलताओं, महीनियों और खूबसूरती के साथ पिरोकर पेश करती है, अपनी सहजता के बावजूद अपना विशिष्ट स्थान स्वयं उपलब्ध कर लेती हैं। मृदुलाजी गर्ग का उपन्यास ‘मिलजुल मन’ ‹सा ही उपन्यास Æ…

इस उपन्यास की विशिष्टता इसके विन्यास और उसके भीतर मौजूद अनुभूति और विचार की सहजता में खूलती चलती है, लेखिका और कथावाचक या नैरेटर सहेलियों के बारे में जो बातचीत करती हैं, उससे समय और स्थान की दूरियां नियंत्रित करते हुए पूर्वापर प्रसंगों के संबंध कथात्मक सरसता के सूत्र में बंधते चलते हैं। लेखिका और मोगरा (नैरेटर) के संवादों के बीच गुलमोहर के जीवन और व्यक्तित्व की अनगिनत परतें मुख्य कथ्य के रूप में उभरते हैं, बाकी परिवार, समाज, देश मिलकर तत्कालीन परिदृश्य गढ़ते हैं, लेकिन मुख्य बात उपन्यास की भूमिका में स्पष्ट कह दी गई है-

“शायद उस दर्द को अलफाज देने से पहले, मु–Ö Æ¸ü ¤ü¤ü ¯Ö¸ü हँसने की ताकत जुटानी थी। वह जुट गई तो खुद ब खुद मुलक की वक्ती मासूमियत को निभाने के लिए मन के पर्दे पर दो कमसिन, एक बला की ज़ेहनी और ज़ज्बाती लड़कियां उभर आई। उपन्यास का किरदार बन गई। जानती मैं उन्हें हमेशा से थी। पर जब उपन्यास लिखना और टाल न पाई, तभी वे पूरे कद-कामत में, ज़ेहन में नमूदार हुई। अपने साथ उस वक्त कÖß

खाका खींचने वाले, लीक से हटे, कई किरदार ले आई। सत्ताइस बरस से जो लिखना चाह रही थी, लिखा जाने लगा। मेरे वक्त और मूलक की, मेरे किरदारों की कहानियां एकमएक हुई और बन गई यह किस्सा, जिसका नाम है 'मिलजुल मन'…"[3] इसतरह उपन्यास का शीर्षक सार्थक है- 'मिलजुल मन'…

'मिलजुल मन' वरिष्ठ कथाकार मृदुलाजी गर्ग का नया उपन्यास है जो उनके लेखन की तरोताजगी और जिंदा दिली की एक ×मसाल है। इस उपन्यास की नायिका गुल मोगरा उर्फ गुल और उसकी बहन मोगरा है। पचास के दशक के दरम्यान वर्ग की जिंदगी और समाज में आनेवाले बदलाव और आजाद भारत में उसकी भूमिका की एक बारीक पड़ताल जो मोगरा ने अपने पिता बैजनाथ जैन के जीवन-व्यवहारों के बहाने की है, उन्हीं हालात में अपने बचपन और उस दौर के चरित्रों को भी देखा-भाला। ऐसे चरित्रों में डॉ. कर्णसिंह, मामाजी, जुग्गीचाचा, बाबा, दादी औन कनकलकता आदि अनेक अविस्मरणीय शख्सियत शामिल है, जिनकी अपनी खसूसियात थीं। गुल का विकास उन्हीं सबके बीच हुआ और उसने अपनी शख्सियत को तरतीब दी है।

यह उपन्यास गुल के उन पक्षों पर भी एक तफसीली नजर है, जो एक लड़की, एक मनुष्य, एक प्रेमिका, एक पत्नी और एक कथाकार के अलग अलग किरदारों में रमें हैं। इसतरह मृदुलाजी ने एक बेहद नाजूक और नजदीकी रिश्तें और एक सशक्त कहानीकार के बीच जिस साफगोई और संवेदनशीलता से इस उपन्यास का ताना-बाना बुना है। यह एक बेहद दिलचस्प और मेयारी आदबी हासिल करनेवाला वर्तमान युग के हिंदी साहित्य का नया उपन्यास है…

उपन्यास के दोनों मुख्य पात्र-गुल और मोगरा कथाकार मंजुल भगत एवं उनकी छोटी बहन मृदुला गर्ग के प्रतिरूप है। उपन्यास के केंद्र में दर्द की जो अभिव्यक्ति है, वह गुलमोहर के लिए ही है। वस्तुतः गुल की यह कहानी पूरीजीवन यात्रा से गुजरते हुए छोटी बहन द्वारा बड़ी बहन को दी गई सर्वश्रेष्ठ श्रध्दांजली है। इसतरह जीवन और साहित्य की समानांतर यात्रा एक-दूसरे (मिलजुल मन) में गुंथकर, एक दूसरे के वजूद की तह बनकर रह गई । गुल एवं मोगरा दोनों का जीवन दिल्ली से आरंभ होता है, अंत में दोनों दिल्ली पहुंच जाती है। बीच के समय में अलग-अलग कई जगहों में रहते हुए दोनों बहनों ने एक वक्त पर आकर लिखना शुरू किया और क्यों शुरू किया वे खुद न जान पाई। इसतरह दोनों बहनों का मिलजूल मन है। यह उपन्यास दो बहनों-गुलमोहर और मोगरा की कहानी 'मिलजुल मन' Æü…

उपन्यास में दोनों मुख्य पात्र-गुल और मोगरा कथाकार मंजुल भगत एवं उनकी छोटी बहन मृदुला गर्ग के प्रतिरूप हैं। लेखिका ने समीक्ष्य उपन्यास में मंजुल भगत की रचनाओं 'अनारो', 'बेगाने घर में' आदि का ×¾ö¿»öषण गुल की रचनाओं के रूप में किया है। वैसे तो किसी एक किरदार के चेहरे में कभी-कभी कई चेहरे चस्पां हो जाते हैं। गुल की वैवाहिक जीवन की त्रासदी से गुजरते हुए पाठक कई बार उसके चेहरे पर चंद्रकिरण सौनरेक्सा का चेहरा चस्पां होते देख सकते हैं।

गुल एवं मोगरा दोनों का जीवन दिल्ली से आरंभ होता है, अंत में दोनों दिल्ली पहुंच जाती हैं। बीच के समय में अलग-अलग कई जगहों में ¸ÆüŸöê हुए भी दोनों बहनों का एक वक्त में ही लिखना शुरू करना क्या आकस्मित है ? मोगरा कहती है, 'गुल और मैंने अलग शहरों में रहते, एक वक्त पर आकर लिखना, क्यों शुरू किया, खुद न जान पाई, आपको क्या ²ÖŸöलाऊं। बाकी की जिंदगी भोगने या गुल के मुताबिक भुगतने और साहित्य रचने, हम दोनों दिल्ली लौटीं। उसकी हकीकत सब जानते हैं, फसाना फिर कभी।' गुल के आकर्षक व्यक्तित्व का कोई भी मुरीद हो जातßö £Öö… आत्मविश्वास एवं आत्मसम्मान ऐसा कि उसके पिता जिस मिस्टर और मिसेज पीटरसन के आगे-पीछे करते रहते थे, उन्हें, ऑक्सफोर्ड में पेरिस मिलाकर उन्हीं की भाषा में जब डांटा तो उनकी हेकड़ी निकल ग¾ö‡… पिताभी गर्व से फूल गए। वही गुल हर तरह से बदल रही थी। ससुराल में पति की नालायकी की तोहमत उसके सिर थी। जैसे बीवी ने शौहर को जन्म देकर पाला-¯ööÃöö Æüö, ´öö-बाप ने नहीं। शराबी-कबाबी पति की फितरत न बदलती थी, न बदली। जुड़वां बच्चों एवं गृहस्थी का बो-ा अकेले ढोती गुल जीवट के साथ जीवन की प्रतिकूलताओं से जू-ÖŸöß ¸Æüß…

उपन्यास के केंद्र में दर्द की जो अभिव्यक्ति है, वह गुलमöÆü¸ के लिए ही है। वस्तुतः गुल की यह कहानी पूरी जीवन यात्रा से गुजरते हुए छोटी बहन द्वारा बड़ी बहन को दी गई सर्वश्रेष्ठ श्रध्दांजलि है, जीवन और साहित्य की समानांतर यात्रा एक-दूसरे में गुंथकर, एक दूसरे के वजूद की वजह बनकर। बहनों का और परिवार का निजी जीवन समस्त अंतरंगता के बावजूद लेखकीय निस्संगता पा गया है, इसलिए जीवन यात्रा अपने समकालीन परिदृश्य के साथ उपन्यास का अनुभव और रूप बखूबी हासिल कर लेती है, बल्कि जीवन की कथा होने से विश्वनीयता का दबाव धनीभूत हो गया है। लेखिका और नैरेटर सखियों की आत्मीय और अंतरंग संवादमयता में ही उपन्यास तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, पारिवारिक और व्यक्तियों के जीवन का ईमानदार खुलासा करता चलता है।

गुल एवं मोगरा के अतिरिक्त कनकलता, कविता, दादी, बाबा, बैजनाथ, मामाजी, जग्गी, शमित एवं पवन आदि कई पात्र हैं, जो तत्कालीन ¤¿ö-दशां तथा गुल एवं मोगरा के चरित्र को व्याख्यायित करने में सहायक होते हैं। लेखिका ने पांचवे दशक की दिल्ली को केंद्र में रखते हुए गुल एवं मोगरा के चरित्र के विविध रूपों को उभारा है। स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद भारत में आर्थिक दैन्य, विदेशी पूंजीवादियों द्वारा निवेश, विभाजन से उपजी त्रासदी आदि की व्यंग्यपरक व्याख्या है।

गुल एवं मोगरा के चरित्र में कई जगह वि¸ö-ö³ööÃö Æü, ×•öÃöê अवास्तविक नहीं कहा जा सकता। घर से बाहर भागते पति को वश में रखने के लिए तमाम और ताना उपाय करते-करते जब गुल निरीहता की हद तक हाफती दिखती है तो उसकी पूर्व की ओजस्वी छवि खंडित होती

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Volume-3, Issue-4, Oct-2013 Available online at www.aygrt.isrj.net

है। उसका यह व्यक्तित्वांतरण गुल को भी नहीं पचता। वह कहती है, “†ºÌ नारीवाद के डर से फर्क आ गया । पश्चिम में, पर अपने यहा हालात कहां बदले। आशिकी के बिना ब्याह हो तो फिर भी आराम रहता है। गुल की तरह, उसे चुकने से बचाने के हलकान नहीं होना पड़ता ।”[4] स्वयं मोगरा का हाल ही बेहतर कहां रहा। दिल्ली में पली-ºÌœß, ¯Ìœß-लिखी, दिल्ली के ही एक कॉलेज में अर्थशास्त्र की प्राध्यापिका मोगरा सब कुछ छोड़कर पिता द्वारा जुटाए गए पति के साथ बिहार के एक कस्बे डालमियानगर में आ जाती है। पवन जैसे ‘नर’ पति के साथ वह एक ‘´ÌÌ¤Ì’ की तरह शरीर को जेहन से अलग बांटकर जीती है। दो फांको में बंटी मोगरा मां बनने के बाद बेबंटी हो जाती है। वह कहती है, “बेबंटी फितरत क्या मिली, मेरा वजूद प्यार के काबिल हो लिया। अर्थशास्त्र छूटा, नौकरी छूटी, शहर छूटा, ¯ार लगा कुछ गंवारा नहीं पाया ही पाया । बच्चों को रचा, तभी भीतर की तख्लीकी बरफ पिघलनी शुरू हो गई थी।”[5] यही मोगरा पहले कहती थी, “औरत की अक्ल का चौथाई हिस्सा शौहर घास चरने भेज देता है, बाकी चौथाई बच्चे। सो ता उम्र या जब तक शख्सियत को उनसे बरी करना न सीखो, आधे दिमाग से काम चलाती है।” यह द्वंद्व और विरोधाभास ही उसके चरित्र को अधिक वास्तविक बनाता है। जिंदगी हमेशा सीधी रेखा से नहीं चलती और न कोई भावना स्थाही होती। सच तो इतना ही है कि जीवन की तमाम विसंगतियों के बावजूद दोनों बहने अपने व्यक्तित्व का एक निजी क्षेत्र सुरक्षित रखती है, दोनों का लेखन इसका गवाह है।

एक तरफ दो बहनों की कहानी जीवन के अंतरंग प्रसंगों और ^ŸÌÌ¸-चढावों के साथ चलती है, दूसरी ओर एक सुशिक्षित प्रबुध्द पिता और पति मि.बैजनाथ जैन का व्यक्तित्व परिवार के अन्य सदस्यों की विशेषताओं के बीच से उभरकर तत्कालीन देशकाल, राजनिति और अर्थव्यवस्था का विश्लेषण अपने निजी जीवन, व्यक्तित्व और व्यवसाय के बरक्स करता है। यह देशकाल आजादी पूर्व से लेकर सत्तर के दशक तक और पुरानी दिल्ली, नई दिल्ली, मसूरी, देहरादून से बिहार के डालमिया नगर तक पसरा है। राजनितिक आर्थिक विश्लेषण से संबध्द टिप्पणियां मोगरा और पिता बैजनाथ के माध्यम से आई है-

“†Ì•ÌÌ¤ß ×´ाली तो कुर्बानियों के एवजमें विधायक, लोकसभा मेंबर, वज़ीर वगैरह बन, रफ्ता-रफ्ता राजदूत या राज्यपाल का ओहदा पाने का चलन हुआ।”

“1956-57 का जमाना था। साम्यवाद और फेबियन समाजवाद का घासल™ß ‘ÌÌ»Ì´Ì»Ì •ÌÌ¸¡ ¯Ì¸¡ £ÌÌ…”

“माली हिकमत के नाम पर सरकार के पास सिफर के अलावा कुछ नहीं है। हमारा वज़ीरे मालियात कटोरा लिए, इस मुल्क से उस मुल्क घुमता है कि दो मदद के नाम पर कर्ज़ दो । जहां तर अमेरिका का सवाल है, उसे अपना दोयम दर्जे का फालतू गेहूं ठिकाने लगाना हैं, सो पी एल 480 के नाम पर हमें बरामद करवा रहा है। मुफ्त तो अमेरिका किसी को जहर भी नहीं देता।”[6]

इसतरह यह उपन्यास दो बहनों-गुलमोहर और मोगरा की कहानी के रूप में रचा गया है। जिसमें प्रमुखतः गुल की कहानी मोगरा कहती चलती है, बीच-बीच में खुद गुल भी सूत्र थाम लेती है, और जहां-तहां लेखिका भी हस्तक्षेप करती है इसलिए इसका शीर्षक ‘मिलजुल मन’ व्यंजक है।

‡ÃÌ ‘मिलजुल मन’ उपन्यास में वस्तुभूत जो जीवन लेखिका ने चुना है, वह दो बहनों के प्रमुख रूप से कैशोर्य और वयः संधिकाल है। क्रीडाभावना के लिए यह वय सर्वथा उपयुक्त भावभूमि प्रदान करता है इसे दर्शाना लेखिका का मुल कथ्य है। सचमुच ‘मिलजुल मन’ सशक्त नारी प्रधान उपन्यास है।

इस उपन्यास का शीर्षक अधिक प्रभावी और पढ़ने के »»Ì‹ उकसानेवाला भी हो सकता था। यह बिलकुल अलग बात है कि इस रचना की लय एक बार पकड़ में आ जाने के बाद यह एक आस्वाद देने लगती हैं जो अपनी तरह का अलग ही आल्हादक और अनूठा भी। अच्छी रचना की एक पहचान यह भी होती है कि वह पाठकों को अपने में रूचिवान बना लेती है और यह हम निस्संकोच कह सकते हैं कि इस अर्थ में यह एक बहुत अच्छी रचना है, इसके बावजूद की शीर्षक इसका उतना प्रभावी नहीं Æ…

**निष्कर्ष :-**

‘मिलजुल मन’ वरिष्ठ कथाकार मृदुलाजी गर्ग का नया उपन्यास है, जो उनके लेखन की तरोताजगी और जिंदादिली की एक मिसाल है। इस उपन्यास का कथाकाल आजादी के तुरंत बाद का है… ¤¿Ì की राजनीतिक नितियों का जैसा था वैसा ही चित्रण किया गया है। जो भी उस समय का सच था, उसे इस उपन्यास में लेखिका ने लिखा है। उसने सोचा था कि आजादी के बाद बहुत कुछ बदल जाएगा जबकि बदला कुछ नहीं, वैसा ही रहा। इस उपन्यास में गुलमोहर अगर अपने पति के साथ जीती है उसतरह, तो उसका निजी प्रेम है। उसपर किसी तरह की बंदिश नहीं है। ऊपर से खुश दिखती है लेकिन अंदर से त्रासद जिंदगी जी रही होती है। मोगरा ने भी अपने जीवन में कोई स्वच्छंदता तो दिखाई नहीं । इसतरह यह उपन्यास स्त्री की व्यथा को स्वतंत्र रूप से चित्रित करनेवाला सशक्त उपन्यास है। “यह उपन्यास गुल के उन पक्षों पर भी एक तफसीली नजर है, जो एक लड़की, एक मनुष्य, एक प्रेमिका, एक पत्नी और एक कथाकार के अलग-अलग किरदारों में रमें हैं।”[7] इसतरह मृदुलाजी ने एक बेहद नाजुक और नजदीकी रिश्तें और एक सशक्त कहानीकार के बीच जिस साफगोई और संवेदनशीलता से इस उपन्यास का ताना-बाना बुना है। यह एक बेहद दिलचस्प और मेयारी आदबी हासिल करनेवाला वर्तमान युग के हिंदी साहित्य का नया उपन्यास है। अंत में दोनों बहन दिल्ली पहुंच

जाती है। बीच के समय में अलग-अलग कई जगहों में रहते हुए दोनों ने एक वक्त पर जाकर लिखना शुरू किया और क्यों शुरू किया वे खुद न जान पाई। इस जीवन और साहित्य की समानांतर यात्रा एक-¤ÃÖ¸ü (मिलजुल मन) में गुंथकर, एक दूसरे के वजूद की तह बनकर रह गई। इसतरह यह उपन्यास दो बहनों-गुलमोहर और मोगरा की कहानी 'x´Ö»Ö•Ö»Ö मन' है। निजी जीवन की अंतरंग कथा बहन से गले मिलकर मन की कथा बन गई।

**ÃÖ¤ü³Ö ÃÖæ“ÖßB**

प्रथम दशक के महिला लेखन में स्त्री-x¾Ö´Ö¿Ö- ´Ö¤ü»ÖÖ ¾Ö´ÖÖ- ¯Ö.89
मिलजुल मन- मृदुला गर्ग- भूमिका से- ¯Ö. 10
¾ÖÆßü- ¯Ö.10
समीक्षा- †¯ÖÏ»Ö-जून 2010- ¯Ö. 24
¾ÖÆß ¯Ö. 24
समीक्षा- मिलजुल मन-†ŒÝÖ²Ö¸ü-x¤ÃÖ²Ö¸ü 2010- ¯Ö. 37
मिलजुल मन- मृदुला गर्ग- प्लैप बैक पृ.से